PAPER - III, UNIT - 2

India - Agricultural Problems

भारत का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। यहाँ की मुख्य उपज खाद्यान्न है जो कुल कृषि भूमि के 75 से 80% भाग पर उगाए जाते है मानसूनी जलवायु के कारण यहाँ पर विविध प्रकार की फसले उत्पन्न की जाती हैं। गेहूँ, चावल ज्वार, बाजरा, मक्का जौ प्रमुख खाद्यान्न है। वर्तमान समय में भारत ने खाद्यान्न उत्पादन मे आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है। खाद्यान्नों की अलावा अनेक ऐसी फसलों भी उगायी जाती है। जिनसे उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त होता है। इनमें से बहुत सा कच्चा माल विदेशों को निर्यात भी किया जाता है। भारत विश्व में सबसे अधिक गन्ना उत्पन्न करता है। भारत चाय का सबसे बड़ा उत्पादक देश है।

⊙ भारत के कृषि फसलों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है:-

कृषि फसलों का वर्गीकरण

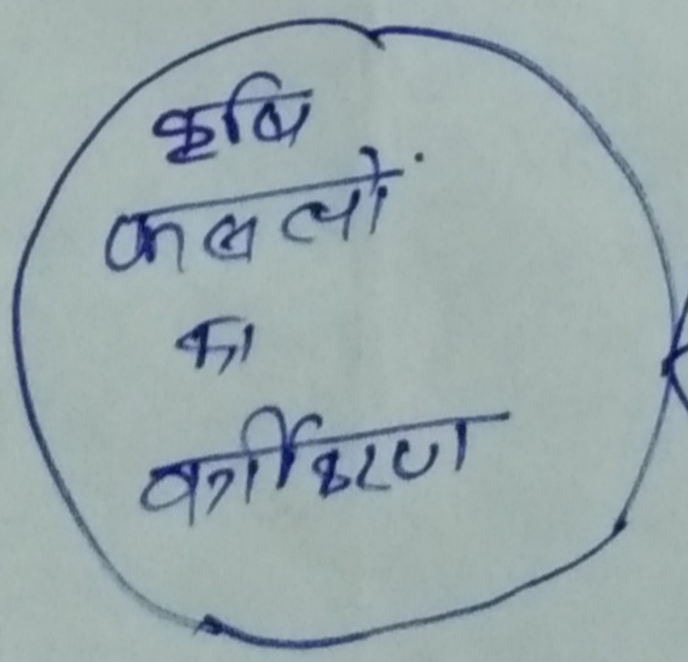

(1) खाद्यान्न फसलें :- चावल, गेहूँ मक्का, ज्वार, बाजरा, जौ, दाले आदि।

(2) औद्योगिक फसले :- गन्ना, जूट कपास, तम्बाकू, तिलहन आदि।

(3) पेय व बागाती फसले :- चाय कहवा, रबड़, सिनकोना, गर्म मसाला, आदि

Agricultural Problems of India

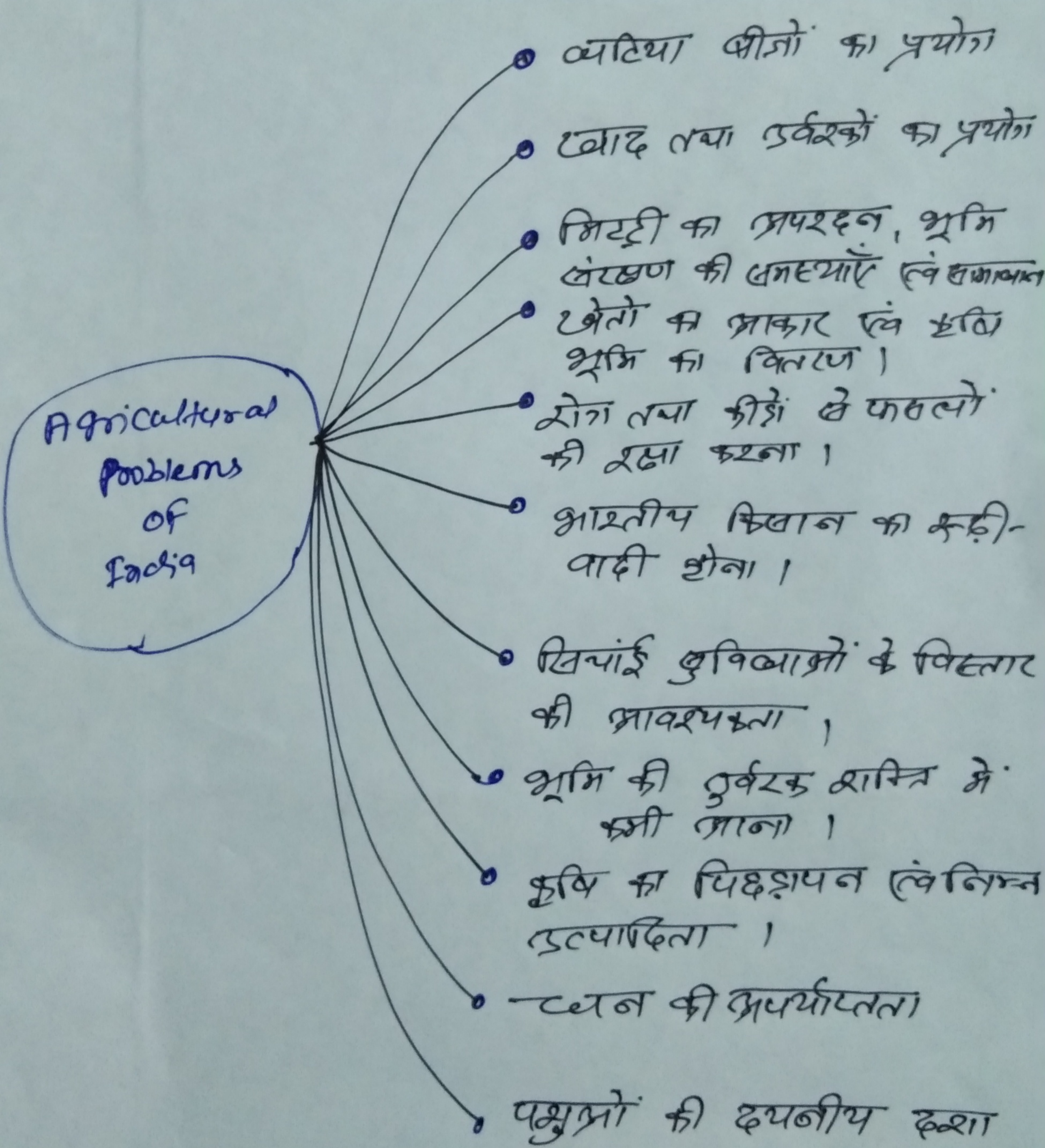

(1) घटिया बीजों का प्रयोग :-

हमारे यहाँ के किसानों द्वारा अधिकांशतः ऐसे बीजों का प्रयोग किया जाता है जिनके प्रति हेक्टेयर उत्पादन बहुत कम प्राप्त होता है। विश्व के अनेक देशों की तुलना में हमारा देश इस दृष्टि से बहुत पीछे है।

हमारे यहाँ उत्पादन घटिया बीजों के कारण काफी कम होता है। कई बार उत्पादन इतना कम होता है कि इनके पास बीज के लिए अन्न या अन्य वस्तुएँ नहीं बचती, जिसके फलस्वरूप उन्हें बाजार से बीज खरीदना पड़ता है।

(2) खाद तथा उर्वरकों का प्रयोग :-

भारत में खाद तथा उर्वरकों का प्रयोग बहुत कम होता है। इससे हमारी भूमि की उत्पादन शक्ति धीरे-धीरे कम होती जा रही है। भारत की मिट्टियों में नाइट्रोजन की विशेष कमी पायी जाती है, इसके अलावा फास्फोरस व पोटेशियम आदि की भी कमी पायी जाती है।

(3) मिट्टी का अपरदन, भूमि संरक्षण की उपायें एवं उनका वर्णन :-

भारत में लगभग 8 करोड़ हेक्टेयर भूमि अपरदन से प्रभावित है। इसमें से लगभग आधी भूमि पर वर्षा द्वारा किया जाता है। वर्षा की मात्रा एवं तीव्रता, अनियंत्रित पशुचारण तथा आँधियों के वेग से मिट्टी का

भारी अपरदन होता है। जिससे मिट्टी का उपजाऊ तत्व नष्ट हो जाता है। जिसे नष्ट होने के रोकने के उपाए ढुंढाना अति आवश्यक है। सरकार द्वारा इस दिशा मे अनेक प्रयत्न किए जा रहे है। यह प्रयत्न 1953 मे आरम्भ हुए जबकि राष्ट्रीय मिट्टी संरक्षण कार्यक्रम का श्री गणेश हुआ। देश मे भूमि को सुधारने के लिए सर्वेक्षण कार्य भी किए जा रहे है।

(4) खेतों का आकार एवं कृषि भूमि का वितरण :-

भारत मे खेतों के छोटे व बिखरे होने के कारण नवीन ढंग से कृषि नही हो पाती है। साथ ही उत्पादन व्यय अधिक आता है और उत्पादन भी कम होता है। जनसंख्या मे निरंतर तीव्र वृद्धि के कारण देश मे खेतों का औसत आकार छोटा होता जा रहा है। जबकि खेतों की संख्या बढ़ती जा रही है।

कृषि भूमि का यह वितरण बड़ा असमान है। 84 प्रतिशत किसानो के पास देश की कुल कृषि भूमि का 30% भाग है। इसका अर्थ यह है कि एक किसान के पास औसत रूप मे 0.1 हैक्टेयर भूमि है और यह भूमि भी कई -छोटे - छोटे खेतो मे बँटी हुई है। इसलिए नई कृषि विधियों को अपनाने मे कठिनाई प्रतीत होती है।

(5) रोग तथा कीड़े से फसलों की रक्षा करना :-

फसलो मे अनेक प्रकार के रोग और कीड़े लगा जाने से करोड़ो रुपये मूल्य की फसलें प्रति वर्

बर्बाद हो जाती है। जैसे, गेहूँ में करंजवा रोग लग जाता है। जिसके कारण दाने बेकार हो जाते हैं। गन्ने के तने में छेद करने वाला कीड़ा लग जाता है। जो उसके रस की मात्रा को खत्म कर देता है। इसी प्रकार से अन्य फसलों को अनेक प्रकार की बीमारियाँ व कीड़े लग जाते हैं।

⑥ भारतीय किसान का रूढ़िवादी होना :-

भारतीय किसान भाग्यवादी एवं रूढ़िवादी है। वह परिश्रम की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करता है। वह कृषि को एक व्यवसाय के रूप में न अपनाकर जीवन-यापन की प्रणाली के रूप में अपनाता है।

⑦ सिंचाई सुविधाओं के विस्तार की आवश्यकता-

भारतीय कृषि प्रधानतः मानसून पर निर्भर करती है। 1979 में मानसून के फेल हो जाने के कारण जो भयंकर सूखा पड़ा उससे इस बात की पुष्टि हो गयी है। की आज भी हमारी कृषि मानसून की दया पर किस सीमा तक निर्भर है। अनेक क्षेत्रों में तो सम्पूर्ण फसले नष्ट हो गयी। जहाँ पर सिंचाई की सुविधाएँ यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध है। वहाँ पर ही कृषि उत्पादन को बनाए रखा जा सका है।

⑧ भूमि की उर्वरक शक्ति में कमी आना :-

भारतीय किसान भूमि पर लगातार खेती कर आ रहा है। वह अपनी भूमि को कुछ समय के

लिए स्थायी नहीं छोड़ता है। वर्तमान समय में भूमि की कमी व जनसंख्या में वृद्धि के कारण यह संभव भी नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि भूमि की खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए उसमें पर्याप्त खाद तथा उर्वरक पदार्थ देकर उसकी उपजाऊ शक्ति को बढ़ाया जाए तथा भूमि की कटाव की समस्या पर ध्यान दिया जाए ताकि उपजाऊ तत्व उसमें से निकलकर न जा सके।

(9) कृषि का पिछड़ापन एवं निम्न उत्पादिता

देश के 64% कार्यशील जनसंख्या सकल घरेलू उत्पाद में 26.7% योगदान दे रही है। जबकि शेष 36% कार्यशील जनसंख्या का योगदान लगभग 73.3% है। इस प्रकार गैर कृषि क्षेत्रों में प्रति श्रमिक उत्पादन की तुलना में कृषि क्षेत्र में प्रति श्रमिक उत्पादन का औसत लगभग आधे से भी कम बैठता है। यह स्थिति भारतीय कृषि के पिछड़ेपन को स्पष्ट करती है।

:0:

Dr. Mukul Kumar